REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 9 | JUNE - 2025

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य

अनुष्का गौतम
यू.जी.सी (नेट), शोध छात्रा, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर,
विश्वविद्यालय, गोरखपुर.

प्रस्तावनाः

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक और व्यावसायिक कौशल का विकास नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास, समाज की सेवा, और आत्मज्ञान की प्राप्ति पर केंद्रित है। प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा को जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया, जहां इसे केवल ज्ञान और सूचना का स्रोत नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और व्यक्ति के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष सिद्धि के लिए आवश्यक माना गया। शिक्षा के इस व्यापक दृष्टिकोण का सबसे प्रमुख उदाहरण वैदिक काल की गुरुकुल प्रणाली है, जहां विद्यार्थी अपने गुरु के सान्निध्य में जीवन के हर पहलू को सीखते थे। यह शिक्षा प्रणाली केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें नैतिक मूल्यों, अनुशासन, शारीरिक स्वास्थ्य, और आध्यात्मिक उन्नति का भी ध्यान रखा जाता था। विद्यार्थी को न केवल विद्वान और कुशल नागरिक बनाया जाता था, बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भी बोध कराया जाता था। भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य समाज में समरसता, सेवा, और न्याय को बढ़ावा देना भी था। शिक्षा के माध्यम से जाति, धर्म, और सामाजिक भेदभावों को समाप्त करने और एक समरस समाज का निर्माण करने का प्रयास किया जाता था। इसके साथ ही, शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सेवा भाव और समाज के प्रति समर्पण की भावना विकसित की जाती थी, जिससे वे समाज के कल्याण में अपना योगदान दे सकें। आधुनिक समय में, शिक्षा का उद्देश्य और भी व्यापक हो गया है। आज के युग में, शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निपुण बनाना, व्यावसायिक कौशलों का विकास करना, और उन्हें सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से सुसज्जित करना है। हालांकि, इस बदलाव के बावजूद, भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों और उद्देश्यों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का यह उद्देश्य न केवल प्राचीन समय में महत्वपूर्ण था, बल्कि यह आज के समाज के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। शिक्षा का यह व्यापक दृष्टिकोण व्यक्ति को केवल सफल नागरिक बनाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसे एक अच्छे इंसान और समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार, भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य व्यक्ति और समाज दोनों के समग्र विकास के लिए समर्पित है।भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास और समाज के कल्याण से जुड़ा हुआ है। प्राचीन भारत में शिक्षा को एक पवित्र साधना के रूप में देखा जाता था, जहां शिक्षा का अर्थ केवल सूचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि जीवन के मूल्यों, नैतिकता, और आध्यात्मिकता का विकास करना था। इस दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाज और आत्मा दोनों के प्रति जागरूक बनाना था।

भारतीय शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

धर्म का पालन और नैतिक विकास– भारतीय शिक्षा प्रणाली में धर्म का पालन एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था। यहाँ 'धर्म' का तात्पर्य केवल धार्मिक कृत्यों और रीति–रिवाजों से नहीं, बल्कि एक ऐसे जीवन से था जो सत्य,

अहिंसा, और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो। धर्म का पालन व्यक्ति को सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों के प्रति जागरूक बनाता था। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, करुणा, और संयम जैसे नैतिक गुणों का विकास किया जाता था। ये गुण न केवल व्यक्तिगत जीवन में महत्वपूर्ण होते थे, बल्कि सामाजिक समरसता और सामूहिक कल्याण के लिए भी आवश्यक माने जाते थे। इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को एक नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बनाना था, जो समाज के हित में कार्य कर सके।

आत्मज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति–भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य आत्मज्ञान की प्राप्ति था। आत्मज्ञान का अर्थ है आत्मा और ब्रह्मांड के गूढ़ रहस्यों को समझना और उनके साथ एकात्मता स्थापित करना। यह ज्ञान व्यक्ति को संसार की माया से मुक्त करता है और उसे मोक्ष की दिशा में प्रेरित करता है। उपनिषदों में कहा गया है कि 'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म' (सत्य, ज्ञान, और अनंत ब्रह्म है)। इस दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कराना था, जिससे वह आत्मा और परमात्मा के एकत्व को समझ सके। इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य केवल सांसारिक सफलता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका संबंध व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति से भी था।

शारीरिक और मानसिक विकास–भारतीय शिक्षा प्रणाली में शारीरिक और मानसिक विकास को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया। गुरुकुलों में विद्यार्थियों को योग, ध्यान, और शारीरिक कसरतें सिखाई जाती थीं, जिससे उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ हो सके। योग और ध्यान के माध्यम से विद्यार्थी न केवल शारीरिक रूप से मजबूत बनते थे, बल्कि मानसिक शांति और एकाग्रता भी प्राप्त करते थे। इससे उन्हें आत्मसंयम और स्वानुशासन की शिक्षा मिलती थी, जो उनके जीवन के हर पहलू में सहायक होती थी। इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी समाहित करता था।

सामाजिक समरसता और सेवा भावना– भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज में समरसता और सेवा भावना का विकास करना था। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को सिखाया जाता था कि वे जाति, धर्म, और अन्य सामाजिक भेदभावों से ऊपर उठकर सभी के प्रति समानता और सम्मान का भाव रखें। शिक्षा का उद्देश्य समाज में सामूहिकता और समरसता को बढ़ावा देना था। यह दृष्टिकोण समाज में एकता और सद्भावना को बढ़ाने में सहायक होता था। इसके साथ ही, सेवा भावना का विकास भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था। विद्यार्थियों को निस्वार्थ सेवा के महत्व को समझाया जाता था और उन्हें समाज के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जाता था।

व्यावसायिक कौशल और आत्मनिर्भरता– आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिक कौशलों का विकास और आत्मनिर्भरता का निर्माण भी है। वर्तमान समय में, शिक्षा का यह उद्देश्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति को रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के योग्य बनाया जा सकता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में भी विद्यार्थियों को व्यावसायिक कौशल सिखाए जाते थे, जैसे कृषि, शिल्पकला, और व्यापार। यह शिक्षा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होती थी। आज के समय में, शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकी ज्ञान और व्यावसायिक कौशलों से सुसज्जित करना आवश्यक हो गया है, जिससे वे समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें।

विज्ञान और तर्कशक्ति का विकास– भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य तर्कशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना भी था। न्याय और वैशेषिक दर्शन में तर्कशक्ति, विश्लेषण, और प्रमाण की महत्ता पर बल दिया गया है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अंधविश्वास और मिथकों से मुक्त कर वैज्ञानिक सोच और तर्कसंगत विचारधारा की ओर प्रेरित करता है। आधुनिक समय में, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विकास के लिए तर्कशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में इस दृष्टिकोण का विकास करना है, जिससे वे समाज की प्रगति में सहायक हो सकें और विश्व को एक बेहतर स्थान बना सकें।

व्यक्तित्व विकास और स्वानुशासन–भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्तित्व विकास और स्वानुशासन का निर्माण करना था। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मसंयम, अनुशासन, और नैतिकता के गुणों का विकास किया जाता था, जो उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। स्वानुशासन का अर्थ है स्वयं पर नियंत्रण और संयम रखना। यह गुण व्यक्ति को अपने कार्यों और विचारों में संयमित और सुसंगत बनाता है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को इस गुण का महत्व समझाना और उन्हें अपने जीवन में इसका पालन करने के लिए प्रेरित करना था।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में उपयोग–भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम परंपराओं में से एक है, जो विज्ञान, दर्शन, कला, और साहित्य सहित अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देती आई है। इस परंपरा का आधार केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन के संपूर्ण पक्षों का विकास और आध्यात्मिक उन्नति भी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, जहाँ प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिकता का बोलबाला है, भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों का समावेश न केवल शिक्षा को अधिक समग्र और संतुलित बना सकता है, बल्कि यह छात्रों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों की भी मजबूत नींव रख सकता है।

योग और ध्यान का समावेश–योग और ध्यान भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐसे महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनका उपयोग आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अत्यंत उपयोगी हो सकता है। योग न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह मानसिक शांति और एकाग्रता भी प्रदान करता है। ध्यान के अभ्यास से छात्रों में एकाग्रता, स्मरणशक्ति, और मानसिक स्पष्टता का विकास होता है। आज की शिक्षा प्रणाली में, जहाँ छात्रों पर अत्यधिक दबाव होता है, योग और ध्यान के माध्यम से उन्हें तनावमुक्त और मानसिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। वर्तमान में कई शिक्षण संस्थानों में योग और ध्यान को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है, जिससे छात्रों को न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन प्राप्त करने में भी सहायता मिल रही है।

नैतिक शिक्षा और मूल्यों का संवर्धन–भारतीय ज्ञान परंपरा में नैतिक शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में गुरुकुलों में छात्रों को नैतिकता, सत्य, अहिंसा, करुणा, और न्याय जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन नैतिक मूल्यों का संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। नैतिकता का अभाव आज के समाज में अनेक समस्याओं का कारण बन रहा है। यदि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित नैतिक शिक्षा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित किया जाए, तो इससे छात्रों में नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित की जा सकती है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को सही–गलत का भेद समझाने और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास किया जा सकता है। इससे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि समाज के स्तर पर भी सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

भारतीय दर्शन का अध्ययन–भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। सांख्य, योग, न्याय, वेदांत, बौद्ध, जैन, और अन्य दार्शनिक परंपराओं का अध्ययन न केवल बौद्धिक विकास के लिए, बल्कि जीवन के गूढ़ प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए भी आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय दर्शन का अध्ययन छात्रों को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। इससे वे न केवल अपने जीवन की समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं, बल्कि उन्हें जीवन के उद्देश्य और उसके गहरे मायनों को भी समझने में सहायता मिल सकती है। भारतीय दर्शन के अध्ययन से छात्रों में तर्कशक्ति, विवेक, और आत्मचिंतन का विकास होता है, जो उन्हें एक संतुलित और परिपक्व दृष्टिकोण के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

प्राचीन विज्ञान और गणित का समावेश–भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान और गणित का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, और सुश्रुत जैसे महान वैज्ञानिक और गणितज्ञों ने विश्व को महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन प्राचीन वैज्ञानिक और गणितीय सिद्धांतों का अध्ययन छात्रों के बौद्धिक विकास में चरक, सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिए, आर्यभट्ट द्वारा प्रतिपादित शून्य की अवधारणा और भास्कराचार्य के गणितीय सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। आधुनिक विज्ञान और गणित के अध्ययन के साथ–साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के इन सिद्धांतों का समावेश छात्रों को एक व्यापक दृष्टिकोण और

गहरी समझ प्रदान कर सकता है। इससे वे न केवल वर्तमान विज्ञान और तकनीकी ज्ञान को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, बल्कि उन्हें नवाचार और अनुसंधान के क्षेत्र में भी प्रेरणा मिल सकती है।

भारतीय कला और साहित्य का अध्ययन–भारतीय ज्ञान परंपरा में कला और साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय कला, संगीत, नाटक, और साहित्य ने सदियों से भारतीय समाज और संस्कृति को समृद्ध किया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय कला और साहित्य का अध्ययन छात्रों के सांस्कृतिक और सृजनात्मक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकता है। भारतीय साहित्य, जैसे वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, और अन्य शास्त्र, न केवल नैतिक शिक्षा का स्रोत हैं, बल्कि वे छात्रों को जीवन के गूढ़ प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए भी प्रेरित करते हैं। भारतीय संगीत, नृत्य, और नाट्य कला के अध्ययन से छात्रों में सृजनात्मकता और सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है। इससे वे अपने सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गर्व और सम्मान का भाव विकसित कर सकते हैं, जो उन्हें एक समृद्ध और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली के तत्व–भारतीय ज्ञान परंपरा की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल प्रणाली, शिक्षक–शिष्य संबंध, और स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी इन तत्वों का समावेश किया जा सकता है।

गुरुकुल प्रणाली–प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का प्रमुख माध्यम थी, जहाँ छात्रों को न केवल शास्त्रों का ज्ञान दिया जाता था, बल्कि जीवन के व्यावहारिक और नैतिक पक्षों की भी शिक्षा दी जाती थी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, यदि गुरुकुल प्रणाली के तत्वों को समाहित किया जाए, जैसे कि गुरु–शिष्य के बीच सीधा संबंध, जीवन के मूल्यों का संवर्धन, और व्यावहारिक ज्ञान का महत्व, तो इससे शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी और समग्र हो सकती है।

स्वाध्याय–स्वाध्याय का अर्थ है आत्मअध्ययन और आत्मचिंतन। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्वाध्याय को अत्यधिक महत्व दिया गया था, जिससे छात्रों में आत्मनिर्भरता और आत्मज्ञान की भावना विकसित होती थी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी स्वाध्याय का समावेश छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान कर सकता है। यह छात्रों में आत्मविश्वास और स्वानुशासन का विकास करता है, जो उनके जीवन के हर पहलू में सहायक होता है।

भारतीय सामाजिक और नैतिक मूल्यों का संवर्धन–भारतीय ज्ञान परंपरा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। सत्य, अहिंसा, और समता जैसे मूल्य भारतीय शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग रहे हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों का संवर्धन छात्रों को एक बेहतर नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति, और सेवा भावना का विकास किया जा सकता है। इस भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक और नैतिक मूल्यों का समावेश आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक संतुलित और प्रभावी बना सकता है। इससे छात्रों में न केवल बौद्धिक विकास, बल्कि नैतिकता और सामाजिक चेतना का भी विकास हो सकेगा।

निष्कर्ष–

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य अत्यंत व्यापक, गहन, और समग्र है। यह केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, और आध्यात्मिक विकास का भी समावेश होता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, जिसमें गुरुकुल, योग, ध्यान, और नैतिक शिक्षा शामिल थे, का उद्देश्य केवल एक कुशल नागरिक का निर्माण करना नहीं था, बल्कि एक समर्पित, नैतिक, और आत्मज्ञानी व्यक्ति का विकास करना था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, जहाँ तेजी से बदलती दुनिया की चुनौतियों के बीच केवल तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान पर बल दिया जा रहा है, भारतीय ज्ञान परंपरा के इन मूल्यों और उद्देश्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज में नैतिकता, सामाजिक समरसता, और सेवा भावना को पुनर्स्थापित करने में भी सहायक हो सकता है। भारतीय

ज्ञान परंपरा में निहित शिक्षा के उद्देश्य आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन समय में थे। यह शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक, और समाज के प्रति जिम्मेदार बनाती है, जो किसी भी समाज के स्वस्थ और सशक्त निर्माण के लिए आवश्यक है। इसलिए, भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षात्मक दृष्टिकोण को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करके, हम न केवल एक बेहतर शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं, बल्कि एक बेहतर समाज और एक संतुलित विश्व की भी नींव रख सकते हैं। शिक्षा का यह उद्देश्य, जो व्यक्ति और समाज दोनों के समग्र विकास को लक्षित करता है, भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी देन है, जिसे अपनाकर हम एक उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. त्रिवेदी राकेश (2014) 'भारतीय शिक्षा का इतिहास' ओमेगा पब्लिकेशन (दरियागंज) नयी दिल्ली।
2. शर्मा संगीता एवं पाण्डेय जय शंकर (2023) 'उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषतायें एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका' ह्यूमैनिटीज एण्ड डेवेलमेन्ट, वाल्यूम–18, नम्बर–01 जनवरी–जून 2023
3. भारत सरकार शिक्षा मन्त्राालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
4. झा कन्हैया (2022) शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता दैनिक जागरण सम्पादकीय आलेख, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान नोएडा (उ0प्र0)
5. प्रो0 गीता सिंह (2022) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता, आरतत, बहुविषयक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान जर्नल पृ0सं0 8–12
6. रिसर्च मैथ्डोलॉजी (डॉ0 आर0एन0 त्रिवेद्वी, डॉ0 डी0पी0 शुक्ला) पृ0सं0 24
7. वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सम्पादक (डॉ0 मनोदत्त पाठक, पृ0सं0 489
8. पतंजलि योग सूत्र 1.2
9. वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पृ0सं0 553
10. मनुस्मृति 3/70
11. अथर्ववेद 12/1/12